8

प्राथमिक स्तर पर हिंदी पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव मूल्यों का अवलोकन

कुमुद भारद्वाज*
राहुल मिश्र**

सुख-शांति, समृद्धि, परस्पर सहयोग और प्रेमपूर्ण संबंध प्रत्येक मानव जीवन की नितांत आवश्यकता है। शिक्षित व्यक्ति से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि वह उपरोक्त भावात्मक मूल्यों से परिपूर्ण होगा। लेकिन वर्तमान जीवन पद्धति ने व्यक्ति को कौशलपूर्ण बनाकर मशीनीकृत मानव बना दिया है, जो इन मूल्यों को सांसारिक वस्तुओं में खोजता है, लेकिन वहाँ इनकी परिपूर्ति नहीं हो पाती। शिक्षित होने के बाद भी अधूरापन जीवन को कचोटता रहता है। प्रस्तुत लेख में मूल्यों की खोज प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5) की हिंदी की *रिमझिम* पाठ्यपुस्तकों में की गई है जिससे विषयवस्तु का बोध मूल्यों के आधार पर शैक्षिक कार्य में किया जा सके। इसके साथ ही पाठ के अंतर्गत छुपे मूल्यों को विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सके।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य के अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त किया जाता है। शिक्षा का सीधा आशय है— मौलिक रूप से व्यक्तित्व का विकास और चरित्र का निर्माण करना। चरित्र निर्माण का आधार क्या हो? इसे परिभाषित करना और मानक तय करना मूल्य शिक्षा का कार्य है। शिक्षा कभी मूल्य रहित नहीं हो सकती। जहाँ शिक्षा होगी वहाँ मूल्य अवश्य पाए जाएँगे, ज़रूरत है तो केवल नज़रिये की, जो शिक्षा की विषयवस्तु को मूल्यों से जोड़े। अब प्रश्न उठता है— मूल्य क्या हैं? और उनका मानक क्या है? मूल्य व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकता है उसी तरह जैसे जीवित रहने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक मैस्लो के अनुसार मनुष्य की छह आवश्यकताएँ हैं— भूख, प्यास, नींद, संतानोत्पत्ति, सुरक्षा सम्मान की आवश्यकता और आत्मसिद्धि (स्वयं को जानना) बताते हैं। मैस्लो ने भूख, प्यास, आवास, नींद, संतानोत्पत्ति आदि आवश्यकताओं को निम्नस्तरीय आवश्यकताओं के अंतर्गत रखा क्योंकि यह आवश्यकताएँ मनुष्य के साथ-साथ पशुओं की भी हैं और शारीरिक स्तर पर जीवित रहने हेतु आवश्यक भी हैं। उच्च स्तरीय आवश्यकताओं के अंतर्गत सम्मान और आत्मसिद्धि को रखा, क्योंकि यह आवश्यकता सिर्फ़ मनुष्य की हो सकती है, पशुओं की नहीं। मनुष्य चिंतनशील और विवेकशील मस्तिष्क का स्वामी है जिसके कारण वह अन्य पशुओं से अलग है।

अब बात आती है कि सम्मान की परिपूर्ति का मानक सम्मान हो या व्यक्तित्व की परिपक्वता या

*वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
**प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

परिपूर्ति। इसकी परिपूर्णता के लिए आवश्यकता होती है— सत्य, धर्म, न्याय, ईमानदारी, शिष्टता, आपसी संबंध (मनुष्य-मनुष्य के बीच, मनुष्य और प्रकृति के बीच, मनुष्य और अन्य जीवों के बीच) त्याग, सहानुभूति, प्रेम ओर सेवा। उपरोक्त गुणों के विकास हेतु शिक्षा के पाठ्यक्रम को विकसित करना होगा। जब शिक्षक की समझ इन बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट होगी तभी वह विषयवस्तु को उनसे जोड़कर व्यापकता में विद्यार्थियों तक अपनी बात पहुँचा सकेंगे। सम्मान के बाद अंतिम बिंदु है— आत्मसिद्धि की प्राप्ति हेतु शिक्षा। आत्मसिद्धि का अर्थ स्वयं को जानना है। अपने स्वभावगत स्वरूप की पहचान हो जाना ही शिक्षा और जीवन का परम लक्ष्य है। स्वभावगत स्वरूप की पहचान सिर्फ़ मानव शरीर के आधार पर ही की जा सकती है। जब व्यक्ति अपने स्वभावगत स्वरूप को प्राप्त करता है तब उसमें प्रेम, दया, करूणा जैसे मौलिक मूल्य उसके मूल स्वरूप में उतरते हैं। तब चाहे व्यक्ति किसी व्यवसाय से जुड़ा हुआ हो वह आत्मसिद्धि के मौलिक गुणों से भरा हुआ रहता है जो उसके व्यवहार में दिखाई देता है। उसके जीवन में खालीपन व नकारात्मक विचारों का अभाव हो जाता है जो मूल्यगत शिक्षा के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है।

वस्तुतः जीवन का असली रहस्य शरीर से विपरीत जीवन की जड़ों में है। जब आत्मिक स्वरूप का बोध व्यक्ति को होता है तो उसकी अनंत शक्तियों का विकास होता है। तब उसे सौंदर्य का बोध होता है, वह प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य को समझने की शक्ति प्राप्त करता है। पुष्प की सुगंध, कोमलता, स्निग्धता, रंग और सौंदर्य का बोध करने के लिए हमें अंतः शक्तियों का बोध करना होगा। आज का विद्यार्थी अपने नैसर्गिक बोध से दूर चला गया है। वह शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करने में लगा हुआ है। भीड़ में सिर्फ़ मशीन की तरह कार्य कर रहा है। शिक्षक उसे मशीन बनाने में अपना सहयोग दे रहा है। शिक्षा सिर्फ़ पढ़ना-लिखना और परीक्षा पास करना नहीं है। शिक्षा का अर्थ अपने व्यक्तित्व की परिपूर्णता करके दूसरे की परिपूर्णता में सहयोगी हो जाने का भाव है।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्वतंत्रता, समानता, व्यक्ति की गरिमा, एकता व अखंडता, संप्रभुता के उद्देश्य रखे गए हैं। वही शिक्षा के लक्ष्य व उद्देश्य और उनकी परिपूर्ति सिर्फ़ मूल्य आधारित शिक्षा के आधार पर की जा सकती है। मूल्य मनुष्य के सिद्धांत और व्यवहार का आधार है। जीवन में क्या महत्वपूर्ण है, इस बारे में मनुष्य मूल्यों के आधार पर निर्णय लेता है। मनुष्य जब ऐसे निर्णय लेता है तब वह केंद्र में 'स्वयं' को रखता है या समाज या देश या प्रकृति को केंद्र में रखता है। इसी के निर्धारण का भाव मूल्य आधारित शिक्षा देती है। शिक्षा ऐसी हो कि वह केंद्रत्व के भाव का निर्णय करने की क्षमता पैदा कर सके।

अगर व्यक्ति को अपने चरित्र का उत्थान, आंतरिक शक्तियों का विकास तथा निर्णय शक्ति के विकास की क्षमता प्राप्त नहीं होती, तो वह व्यक्ति सामाजिक व व्यावसायिक स्तर पर पिछड़ जाता है। इसके साथ ही राष्ट्र निर्माण में अपना कोई योगदान भी नहीं कर पाता।

शिक्षा के अंतर्गत पढ़ना, लिखना, तकनीक का प्रयोग आदि कौशलों का विकास आता है। इसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि व्यक्ति ने अपने अंदर उपस्थित पूर्णता को प्राप्त कर लिया। यहाँ

'पूर्णता' का अर्थ उस दिव्यता से है जो मनुष्य के अंदर छिपी हुई है। जब इस दिव्यता का विकास मनुष्य में होता है तब वह 'स्वयं' से हटकर 'संपूर्णता' की बात करता है। जब व्यक्ति संपूर्णता में अपना जीवन जीना शुरू करता है, तब वह उपस्थिति साधन और संसाधनों का उपयोग और उपभोग कैसे हो? कितना हो? किसके लिए हो? आदि की बोधात्मक समझ प्राप्त करता है। यही मूल्य आधारित शिक्षा है।

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

1. हमारे व्यक्तित्व का विकास तभी संभव है जब हमें मूल्य शिक्षा का महत्व पता हो। हम उसे दैनिक जीवन में प्रयोग करना सीखें, मूल्य शिक्षा के कारण हमारे शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक एवं सौंदर्यात्मक विकास हो जाता है।
2. वैज्ञानिक स्वभाव एवं लोकतंत्रात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया गुज़रती है, तब व्यक्ति को प्रत्येक में सकारात्मक मूल्य दिखाई पड़ते हैं।
3. मूल्य शिक्षा, भौतिक, सामाजिक, तकनीकी, आर्थिक एवं सांस्कृतिक-पर्यावरण के प्रति जागृति उत्पन्न करती है। मूल्य शिक्षा के आधार पर ही हम सब पर्यावरण का महत्व और उसके साथ संबंध को समझते हैं।
4. मूल्य शिक्षा, धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक न्याय, प्रतिष्ठा और व्यक्ति की गरिमा के लिए प्रतिबद्धता उत्पन्न करती है।
5. मूल्य शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे की भावना विकसित करना है। मूल्य शिक्षा ही प्रत्येक पदार्थ वस्तुओं की उपयोगिता को समझाती है।
6. मूल्य शिक्षा का उद्देश्य देशभक्ति और राष्ट्रीय एकीकरण की भावना का आकलन करना है।

मूल्य का वर्गीकरण

शिक्षाशास्त्रियों ने मूल्यों का वर्गीकरण अलग-अलग तरह से किया है, जो इस प्रकार है—

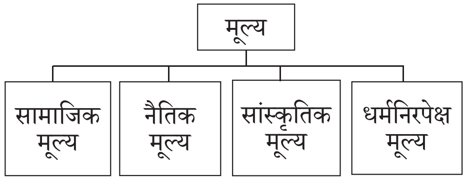

सामाजिक मूल्य

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया समाज में होती है और वह सब कुछ समाज में सीखता है। सामाजिक स्वीकृतियों तथा दंड के कारण मनुष्य सामाजिक नियमों तथा अपेक्षाओं के अनुरूप काम करना सीखता है। मनुष्य समूह में रहता है, उसके अनुकूल एक आचार संहिता का पालन करता है ताकि सभी शांतिपूर्वक रह सकें। उदाहरण के लिए, चोरी न करना, सदा सत्य बोलना, बड़ों का आदर सम्मान करना सामाजिक मूल्य हैं।

नैतिक मूल्य

राधाकृष्णन के अनुसार— हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक व्यायाम बन कर रह गई है, उसमें नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं। नैतिकता उन सिद्धांतों की संहिता है जो उत्तम जीवन जीने के लिए आवश्यक है। व्यक्ति के जीवन के लिए नैतिक मूल्यों का अधिक महत्व है। इन्हीं के आधार पर व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए, ईमानदारी, सत्यता, नैतिक स्थिरता, अच्छा

चरित्र, अहिंसा, पवित्रता, सहानुभूति, विनम्रता, उच्च विचार आदि। नैतिक मूल्य वह अमूल्य निधि हैं जो मन और विचार से मनुष्य को पवित्र बनाते हैं। मूल्य हमें निवर्धन एवं स्वावलंबी बनाते हैं एवं बाहरी समस्याओं से हमारी रक्षा करते हैं। जीवन में मूल्यों के उतरते ही जीवन वास्तविक तथा सार्थक बन जाता है।

सांस्कृतिक मूल्य

प्रत्येक संस्कृति के अपने सांस्कृतिक मूल्य होते हैं। ईश्वर में विश्वास, अध्यात्मवाद, अहिंसा, सहनशीलता, परानुभूति, सादगी, समाज सेवा, निष्काम कर्म आदि भारतीय सांस्कृतिक मूल्य हैं। व्यक्ति के लिए अपने आध्यात्मिक अस्तित्व की पहचान करना आवश्यक है जिससे आत्मसंयम, आत्मशक्ति और आत्मबल प्राप्त होता है। इन मूल्यों के ह्रास के कारण आंनद, प्रेम और खुशी बाहर जगत में ढूँढ़े जा रहे हैं।

धर्मनिरपेक्ष मूल्य

परस्पर सद्भावना, सहयोग सहनशीलता महत्वपूर्ण धर्मनिरपेक्ष मूल्य हैं। आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकसित स्वरूप ही मूल्यनिष्ठ जीवन है।

धर्म निरपेक्षता संसार के विभिन्न धर्मों में व्यक्त शाश्वत सत्यों की प्रशंसा करती है। अधिकांश धर्मों का विचार है कि मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। लोगों में सहयोग की भावना को विकसित करना चाहिए। इससे सामूहिक जीवन के विकास में सहायता मिलती है।

विभिन्न रीति-रिवाज, विश्वास एवं धर्म का पालन करने वाले लोगो में सद्भावना अवश्य होनी चाहिए। यह सफल और शांति पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है।

कक्षा 1 से 5 तक की हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तक रिमझिम में जीवन मूल्यों को खोजने का प्रयास किया गया है, पाठ में निहित मूल्यों को अभिव्यक्त करने और जीवन से जोड़ने का प्रयास—

सामाजिक मूल्य का विश्लेषण

कक्षा	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	उदाहरण	निहित मूल्य
कक्षा 1	'बंदर और गिलहरी'	68	बंदर की पूँछ को गिलहरी झूला समझकर झूलती है पर बंदर क्रोध न करके प्यार से कहता है, "बहन गिलहरी क्या कर रही हो, मुझे गुदगुदी हो रही है।"	साथी भावना, अच्छा आचरण और सामान्य सहमति
कक्षा 2	'दोस्त की मदद'	27	तेंदुए की गिरफ़्त में आए अपने दोस्त कछुए की मदद के लिए लोमड़ी बड़ी चतुराई का परिचय देती है और कहती है, "तेंदुए जी कछुए की खोल को तोड़ने का मैं आसान तरीका बताती हूँ, इसे पानी में फेंक दो।"	मित्रता, दूसरों की चिंता और सहयोग
कक्षा 3	'मूस की मज़दूरी'	45	यह पाठ हमें कृतज्ञ होने की समझ के साथ यह भी बताता है कि प्रत्येक जीव-जंतु का महत्व होता है और वह हमें किसी न किसी रूप में सहयोग करते हैं, "मूस पानी में सरसर तैर गया और बालियों को दाँतों से कुतर-कुतर कर किनारें पर लाने लगा।"	परोपकार, श्रम निष्ठा और ईमानदारी तथा कृतज्ञता

कक्षा 4	'सुनीता की पहिया कुर्सी'	100	इस पाठ में एक छोटा बच्चा बिना जान-पहचान के भी सुनीता की मदद करना चाहता है। "मैं अमित हूँ", उसने अपना परिचय दिया, "क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?"	भातृत्व, अच्छाई और शिष्टाचार
कक्षा 4	'किरमिच की गेंद'	15	इसमें पाठ के माध्यम से यह समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है कि हम परस्पर सहयोग के बिना सुख प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हमें कभी जिंदगी के प्रत्येक मोड़ पर दूसरे के साथ की आवश्यकता होती है, "दिनेश का मन उस समय सबके साथ खेलने का कर रहा था"	परस्पर सहयोग भावना और कार्य एकता भावना
कक्षा 5	'विशन की दिलेरी'	119	विशन तीतर को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। वह तीतर को अपने स्वेटर से बचाता है। तीतर स्वेटर में फँस गया तो विशन ने उसे अपने सीने से लगा लिया।	सेवा भाव, करुणा और जीवों के प्रति दया।

नैतिक मूल्य का विश्लेषण

कक्षा	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	उदाहरण	निहित मूल्य
कक्षा 1	'सात पूँछ का चूहा'	116	सात पूँछ का चूहा पाठ में चूहा एक विशेषता सात पूँछों के होते हुए भी दूसरों के बीच सम्मान नहीं प्राप्त कर पा रहा है और वह उस सम्मान को प्राप्त करने के लिए अपनी सातों पूँछों को कटवा देता है।	आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और स्व-सहायता
कक्षा 3	'शेखबाज मक्खी'	10	'शेखबाज मक्खी' के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति का अपना महत्व होता है। कौन बड़ा है और कौन छोटा इसका निर्णय कोई नहीं कर सकता है। कहते हैं जहाँ काम आवे सुई काह करे तलवार।	प्रत्येक वस्तु का अपना महत्व होता है।
कक्षा 4	'किरमिच की गेंद'	12	दिनेश गेंद को अपने पास रखना चाहता है, किंतु उसका अंतर्मन इस बात की गवाही नहीं दे रहा है कि वह दूसरों की गेंद को अपने पास कैसे रखे,"वह सोचने लगा भले ही यह गेंद मोहल्ले में से किसी की न हो परंतु ईमानदारी इसी में है कि एक बार सबसे पूछ लिया जाए।"	ईमानदारी और सत्यता
कक्षा 5	'नन्हा फ़नकार'	34	केशव दस साल का है किंतु अपने आत्मोत्थान के लिए वह प्रभावशाली अभिव्यक्ति करने में सक्षम है।	आत्मविश्लेषण—एक स्वरूप अभिव्यक्ति

सांस्कृतिक मूल्य का विश्लेषण

कक्षा	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	उदाहरण	निहित मूल्य
कक्षा 1	'एक बुढ़िया'	87	मानव समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, उसकी श्रेष्ठता का प्रमुख आधार उसका सुसंस्कृत होना है। यह संस्कृति ही है जो उसे अन्य प्राणियों या पशुओं से अलग करती है। संस्कृति में सीखे जाने, संचारित होने व हस्तांतरित होने के गुण निहित हैं। 'एक बुढ़िया' पाठ में वरली पेंटिग को पुस्तक के पृष्ठों पर उकेरा गया है, इसके माध्यम से बच्चे वरली पेंटिग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ उसे बनाने का प्रयास भी करेंगे।	सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना, निष्काम कर्म और शरीरिक श्रम की प्रतिष्ठा
कक्षा 2	'टेसू राजा बीच बाज़ार'	69	जैसा कि आप सब जानते है कि टेसू एक प्रसिद्ध उत्सव व खेल है जो दशहरे के दिनों में मनाया जाता है। हम सब ने यह खेल खेला है। आज भी जब दशहरा का त्यौहार आता है तो हमारी पुरानी यादें ताज़ा हो जाती हैं। हम गाते थे — टेसू से टेसू घंटार बजाइयो। नौ नगरी, नौ गाँव बसाइयो।	भक्ति अभिव्यक्ति विश्वास
कक्षा 3	'हमसे कब कहते'	47	हमारी संस्कृति में सदा यह विचारणीय होता है कि हम सबके लिए जो निर्धारित कार्य हैं उन कर्तव्यों का हमें बोध होना आवश्यक है। उन कर्तव्यों का निर्वाह करने में हमें कोई कोताही नहीं बरतनी चाहिए।	कर्तव्यबोध एवं उसका निर्वहन
कक्षा 4	'दोस्त की पोशाक'	35	हमें बालपन से यह सीख दी गई है कि अपने पास जो है उसी में संतुष्ट होने की आवश्यकता है। क्योंकि ऐसा न करने पर हमारे आत्मसम्मान को कभी भी ठेस लग सकती है। "तुम्हारी कैसी अकल है? क्या यह बताना ज़रूरी था, कि यह अचकन तुम्हारी है? तुम्हारा पड़ोसी सोच रहा होगा कि मेरे पास अपने कपड़े हैं ही नहीं।"	सादा जीवन उच्च विचार
कक्षा 5	'स्वामी की दादी'	105	हमारी संस्कृति में सदा इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि हमें अपने किए वादे पर कायम रहना चाहिए। कहा भी गया है— प्राण जाए पर वचन न जाए। स्वामी की दादी ने इसका समर्थन किया और सत्यवादी हरिश्चंद्र की कहानी सुनाने की बात कही, जिन्होंने वचन का पालन करने के लिए सिंहासन, पत्नी और बच्चे को खो दिया।	सच्चाई और परोपकार त्याग की भावना

धर्मनिरपेक्ष मूल्य का विश्लेषण

कक्षा	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	उदाहरण	निहित मूल्य
कक्षा 1	'मैं भी'	9	धर्मनिरपेक्षता में 'जिओ और जीने दो' के आदर्श को प्रोत्साहित किया गया है। एक अंडे में से बत्तख का बच्चा और एक अंडे में से मुर्गी का चूजा निकलता है, दोनों अलग होते हुए भी एक साथ खेलते हैं, बत्तख का बच्चा तैरता है तो चूजा भी तैरने लगता है और चूजा डूबने लगता है और बचाओ-बचाओ डूबते हुए चिल्लाता है, बत्तख का बच्चा चूजे को पानी से बाहर निकालता है।	परस्पर सहयोग प्रेम और निर्भीकता
कक्षा 2	'एक्की दोक्की'	98	धर्मनिरपेक्षता में शांति, सद्भावना एवं विवेक निहित है। यह मानव जाति में भातृ-प्रेम तथा विश्व एकता के विकास में सहायता प्रदान करती है तथा पशु सेवा पर भी बल प्रदान करती है।	धर्मनिरपेक्षता, सद्भाव और एकता
कक्षा 3	'मीरा बहन और बाघ'	96	धर्मनिरपेक्षता घृणा के स्थान पर प्रेम, स्वार्थ के स्थान पर अंहिसा को विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। मीरा बहन के ऊपर महात्मा गांधी के विचारों का इतना असर हुआ कि वे अपना घर और माता पिता को छोड़कर भारत आ गईं। गाँव में बाघ से परेशान लोगों ने बाघ को पकड़ने की योजना बनायी, जिसमें पिंजरे में बकरी को बाँधा गया और बाघ को फसाने का प्रयास किया गया। मीरा बहन का कथन कि, "आखिर बाघ को धोखा देकर क्या फँसाएँ।"	ईमानदारी, धोखा न देने की भावना और अहिंसा।
कक्षा 4	'स्वतंत्रता की ओर'	72	धनी के माध्यम से पशु सेवा करने को प्रोत्साहित किया गया है। छोटे-से-छोटा बच्चा भी महात्मा गांधी के आश्रम में देश-प्रेम से ओत-प्रोत था। वह देश के लिए अपना योगदान देना चाहता है? नौ साल का बच्चा धनी कहता है, "क्या मैं आपके साथ दांडी चल सकता हूँ।"	त्याग की भावना देशभक्ति और श्रम निष्ठा

निष्कर्ष

पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* भाग 1–5 की विषयवस्तु का अध्ययन व विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि इन पाठ्यपुस्तकों में अधिकांश स्थान पर जीवन मूल्य निहित हैं। यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, सृजनात्मकता आदि क्षमता का विकास करने के साथ-साथ उन्हें जीवन मूल्यों को जानने के अवसर प्रदान करती है और विद्यार्थियों को चिंतन की ओर अग्रसित करती है।

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2009. *रिमझिम - 1* - प्रथम कक्षा के लिए. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2009. *रिमझिम - 2* - दूसरी कक्षा के लिए. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2009. *रिमझिम -3* - तीसरी कक्षा के लिए. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2009. *रिमझिम -4* - चौथी कक्षा के लिए. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2009. *रिमझिम -5* - पाँचवी कक्षा के लिए. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

सिंह कुमार, अरूण. *शिक्षा मनोविज्ञान*. प्रकाशन भारती भवन, पटना.

मिश्र, भास्कर. *मूल्य आधारित शिक्षा*. कनिष्क पब्लिशर्स.